भारतीय अग्निशमन सेवाएँ

देश में तेजी से हुए औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण को ध्यान में रखते हुए जनसामान्य के जान-माल की सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था करने की अत्यधिक आवश्यकता है ताकि समुचित अग्नि सुरक्षा उपायों के अभाव में न तो किसी की जान जाए और न ही सम्पत्ति का नुकसान हो।

भारत में नियमित अग्निशमन सेवाओं की शुरुआत ब्रिटिश हुकूमत के दौरान बम्बई (मुम्बई) और कलकत्ता (कोलकाता) में हुई। १८०३ में बम्बई में भीषण अग्निकांड हुआ । इसी घटना के बाद भारत में अग्निशमन सेवाओं की रूप-रेखा तैयार होने लगी। इससे पहले, अग्निशमन का दायित्व पुलिस निभाती थी। १८२२ में कलकत्ता पुलिस के अधीन कलकत्ता में अग्निशमन सेवा को संगठित किया गया। इसके बाद १८५५ में बम्बई फायर ब्रिगेड का आधिकारिक रूप से गठन किया गया और इसे सरकार के दायरे में पुलिस का अंशकालिक कार्य बनाते हुए पुलिस सेवा के अंतर्गत लाया गया। इसी के साथ, बम्बई में पुलिस के नियंत्रणाधीन अश्वचालित अग्निशमन इंजनों से युक्त नियमित अग्निशमन सेवा प्रारम्भ हुई। बम्बई फायर ब्रिगेड अर्थात् अग्निशमन दल को १८६५ में संयुक्त रूप से सरकार तथा नगर निगम के नियंत्रण में लाया गया। कलकत्ता फायरब्रिगेड को पांच (५) अग्निशमन इंजनों से लैस किया गया, जिसमें से तीन (३) इंजन अश्वचालित थे और दो (२) का प्रचालन मैनुअल रूप से किया जाता था। १८७२ में की गई व्यवस्था के अनुसार, कलकत्ता अग्निशमन दल के वित्तीय संचालन का दायित्व कलकत्ता कॉरपोरेशन (महानगर पालिका) तथा उप-नगरीय नगर पालिकाओं के सुपुर्द किया गया। १८७२ तथा १८७८ के नगर पालिका अधिनियम के माध्यम से, बीमा कंपनियों के लिए अग्निशमन सेवाओं के संचालन हेतु अंशदान देना अनिवार्य बनाया गया। १८८८ में, बम्बई नगर पालिका अधिनियम के माध्यम से, अग्नि से जान और माल की सुरक्षा का अनिवार्य दायित्व बम्बई नगर पालिका को सौंपा गया। दिल्ली में अग्निशमन दल की शुरुआत १८६७ में हुई मानी जाती है। परन्तु, दमकल केन्द्रों का संगठित रूप नगर निगम के दायरे में १८९६ में सामने आया।

१९०७ में पेट्रोल आधारित अग्निशमन इंजन का आयात किया गया और इसे बम्बई अग्निशमन दल में शामिल किया गया। बम्बई फायर ब्रिगेड के डब्ल्यू. जे. स्कली, बॉम्बे साल्वेज कोर (बम्बई रक्षा कोर) में शामिल हुए, जिसकी स्थापना ३७ बीमा कंपनियों ने मिलकर ०१ मई, १९०७ को की थी। बचाव अभियान के अतिरिक्त, इस कोर का मुख्य उद्देश्य अग्निकांडों के जोखिमों को कम करना था।

मद्रास शहर में १९०८ में आग लगने की एक बड़ी घटना घटी । इसके बाद, मद्रास नगर निगम द्वारा मद्रास शहर अग्निशमन दल की स्थापना की गई ।

१९१० में, बंगाल प्रांतीय सरकार ने फायर ब्रिगेड दल को मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से एक समिति का गठन किया। कलकत्ता फायर ब्रिगेड ने पूर्वी भारत में आधुनिक और सभी सुविधाओं से युक्त अग्निशमन सेवा की बुनियाद रखी। १९१३ में स्ट्रीट फायर अलार्म प्रणाली की शुरुआत हुई। १९२० में इस ब्रिगेड को अश्वचालित स्टीम इंजन के स्थान पर मोटर वाहन आधारित बना दिया गया।

स्वतंत्रता के पश्चात्, भारतीय अग्निशमन सेवा को संविधान की १२वीं अनुसूची के अंतर्गत अनुच्छेद २४३ डब्ल्यू के प्रावधानों के अनुसार नगर पालिका के दायरे में लाया गया। वर्तमान में, अग्निशमन सेवाओं के संचालन का कार्य संबंधित राज्यों तथा संघ शासित क्षेत्रों द्वारा किया जाता है।

विगत वर्षों में अग्निशमन दलों की सेवाओं में व्यापक परिवर्तन आया है और इसके दायरे में आग लगने की घटनाओं के अतिरिक्त इमारतों के ढहने, लोगों के डूबने और सड़क दुर्घटनाओं तथा विभिन्न आपातकालीन परिस्थितियों में बचाव कार्य के साथ-साथ दुर्घटना स्थल पर प्रथमोपचार की व्यवस्था करना और अग्नि संबंधित सुरक्षा नियमों के कार्यान्वयन का कार्य शामिल है।

देश के साहसी अग्निशमन कर्मियों के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त करते हुए प्रति वर्ष १४ अप्रैल को देशभर में अग्निशमन सेवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसके साथ-साथ,१४-२० अप्रैल तक अग्निशमन सेवा सप्ताह भी मनाया जाता है। इस दौरान, प्रदर्शनियों और सम्मेलनों के साथ-साथ मॉक ड्रिल के माध्यम से अग्नि संबंधी सुरक्षा और बचाव के बारे में लोगों को जागरूक बनाया जाता है।

अग्नि सुरक्षा के शीर्षस्थ निकाय अर्थात् स्थायी अग्निशमन परामर्शदात्री परिषद की पहल पर राष्ट्रीय अग्नि सुरक्षा प्रतीक चिह्न की परिकल्पना की गई और १९६८ में इसे स्वीकार किया गया । इस प्रतीक चिह्न पर एक अग्निशमन कर्मी के हाथ में मशाल दिखाईगई है, जिसके इर्द-गिर्द नीले वृत्त अंकित किए गए हैं, जोकि अग्नि को शांत करने वाले पानी का प्रतीक हैं। इसके बाहरी किनारे पर उठते धुएं का अंकन किया गया है। प्रतीक चिह्न में अग्निशमन सेवा के आदर्श वाक्य "त्राणाय सेवामहे" अर्थात् "हम सेवा करते हैं बचाने के लिए" को भी शामिल किया गया है।

डाक विभाग, देश सेवा में शानदार इतिहास वाली भारतीय अग्निशमन सेवा के सम्मान में एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/ प्रथम दिवस आवरण/ विरूपण : श्रीमति अलका शर्मा

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पै.
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	4.00 लाख
Stamps Printed	:	0.40 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

Fire Services of India

Owing to rapid industrialization and modernization of the country, the security of life and property in such a community is to be developed so that there is neither loss of life nor damage of property without adequate fire protection measures being adopted.

The regular Fire Services in India first came up in Bombay (Mumbai) & Calcutta (Kolkata) during the British period. The great fire of Bombay occurred in 1803 and the first nucleus of fire service in India took shape. Prior to this, the Police force was entrusted with fire fighting jobs. In 1822, the service in Calcutta was organized under the Calcutta Police. In 1855, the Bombay fire brigade was officially formed and formally placed under the police as a part-time function of the Police under Government and a regular fire service with horse drawn fire engines came into being in Bombay under the control of Police. Bombay Fire Brigade was placed jointly with the Government and Municipal Corporation in 1865. Five fire engines, three horse-drawn and two manually operated, were in included in the Calcutta Fire Brigade and in 1872, the Calcutta fire brigade came to be financed by the Calcutta Corporation and the suburban municipalities. By the Municipal Act 1872 and 1878, insurance companies were made to contribute towards the maintenance of the fire brigades. In 1888, through the Bombay Municipal Corporation Act, protection of life and properties against fire became the obligatory duty of the Bombay Municipal Corporation. Delhi is believed to have got a fire brigade in 1867, but organized form of fire stations is believed to have started in 1896 under the Municipal Corporation.

In 1907, the first petrol driven motor fire engine was imported and commissioned in Bombay Fire Brigade. W. J. Scully of Bombay Fire Brigade joined the Bombay Salvage Corps, which was formed on 1st May 1907 by 37 Insurance Companies. One of the prime objectives of the Corps, apart from salvage operation, was to minimize chances of fire.

The Madras city fire brigade was established in 1908 by the Municipal Corporation of Madras after a devastating fire in the city.

In the year 1910, the provincial Government of Bengal appointed a committee to recognize the Fire Brigade. The Calcutta Fire Brigade laid foundation of modern and well equipped services in the East. Street Fire Alarm System was first introduced in 1913. Motorization of the Brigade was completed by replacing horse drawn steam Engine in 1920.

After Independence, the Fire Services in India were incorporated under the 12th schedule of the Constitution, provisions of Article 243 W within the domain of municipalities. Today, the Fire Services are organized by the concerned States and Union Territories.

Over a period, the role of the Fire Services has undergone a considerable change and now it includes attending to fire incidents and emergency situations like building collapse, drowning and road accidents, carrying out search rescue operations, providing first aid on site and implementing fire safety codes.

14th April is observed throughout the country as the Fire Services Day to pay homage to all the gallant firemen. 14th to 20th April is observed as Fire Service Week where activities highlighting fire safety and prevention through demonstrations, mock drills are held along with exhibitions and conferences.

A National Fire Emblem was conceived by the Standing Fire Advisory Council, the apex body on the subject, and was adopted in 1968. The emblem indicates a hand of the firefighter holding the flame at the centre surrounded by blue circles symbolizing water controlling the fire. At the outer periphery, the silver grey fumes of smoke are visible. The motto of Fire Services "त्राणायसेवामहे" or "We Serve to Save" has also been incorporated in the Emblem.

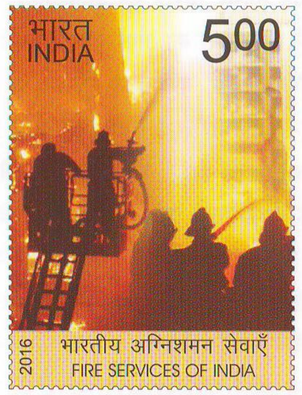
Department of Posts is pleased to release a commemorative postage stamp in the honour of "Fire Services of India" which have a glorious history in this country.

Credits:-

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp/ FDC/ Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts India



भारतीय अग्निशमन सेवाएँ

FIRE SERVICES OF INDIA

विवरणिका BROCHURE